फरीदाबाद

मजदूर समाचार

मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

Published

Reflections on Marx's Critique of Political Economy

Reprinted

a ballad against work

The books are free

नई सीरीज नम्बर 119 मई 1998

उनके माहौल और हमारी मर्जी

मजदूरों को मुट्ठी में रखना और काम करवाना मैनेजमेन्टों का जीवन है। कुटिलता और क्रूरता ऐसे जीवन का चरित्र है।

मजदूर होना मजबूर होना ही नहीं है बल्कि एक छटपटाहट का होना भी है। खटने के खिलाफ स्थाई गुस्सा और बचने के सतत उपाय करना मजदूरों का जीवन है। खुद कदम उठाना ऐसे जीवन का चरित्र है।

तन्त्र और जाल

मजदूरों को खुद कदम उठाने से रोकना मैनेजमेन्टों के लिये जीवन-मरण का प्रश्न हैं। अपने को बनाये रखने के लिये मैनेजमेन्टें जाल रचती हैं तथा माहौल बनाती हैं। इसके वास्ते सुपरवाइजर-मैनेजर-सेक्युरिटी-लीडर-थानेदार वाला ताना-बाना है। ठन्डा रखना और गरम करना, हवा भरना और हवा निकालना दो छोर हैं मैनेजमेन्टों की नीति-कुनीति के।

रुटीन माहौल, यानि, ठन्डा रखना

बिना ज्यादा झँझट के मजदूरों को निचोड़ने के वास्ते माहौल को ठन्डा रखना मैनेजमेन्टों की सामान्य पालिसी है। इस ठन्डी चोट की काट मजदूरों ने बखूबी विकसित कर ली है। दुनियाँ-भर में सुपरवाइजरों-मैनेजरों की फौज का बढते जाना और चप्पे-चप्पे पर थानों का बनना मजदूरों द्वारा मैनेजमेन्टों के ठन्डे उस्तरे की धार को भोथरा कर देने के गवाह हैं। इसलिये इस बारे में अधिक चर्चा हम यहाँ नहीं करेंगे।

गरम करना उर्फ बड़े हमले

— मजदूरों द्वारा खुद उठाये जाते कदमों का अनन्त सिलसिला देर-सबेर मैनेजमेन्ट की जकड़ को बहुत ढीली कर देता है। मजदूर कन्ट्रोल के बाहर हो जाते हैं। अपने तन्त्र और जाल में मजदूरों को पुनः जकड़ने के लिये वरकरों पर बड़ा हमला करना मैनेजमेन्ट के लिये अनिवार्य हो जाता है।

— मंडी में होते लगातार परिवर्तन देर-सबेर हर मैनेजमेन्ट को ऐसी स्थिति में पहुँचा देते हैं कि होड़ में बने रहने, जिन्दा रहने के लिये मजदूरों पर बड़ा हमला करना उसके लिये अनिवार्य बन जाता है।

अतः जब-तब मजदूरों पर बड़ा हमला करना किसी मैनेजमेन्ट के अच्छी या बुरी होने की वजह से नहीं है।

बड़े हमलों में होते हैं: बड़ी संख्या में मजदूरों को नौकरी से निकालना; झटके में काम का भारी बोझ लादना ; वेतन आदि में बड़ी कटौती ; अत्याधिक सख्त जकड़।

मजदूरों पर बड़े हमलों के जरिये हैं तालाबन्दी, हड़ताल और हिंसा। 1979 में ईस्ट इंडिया कॉटन , 1982 में के जी खोसला कम्प्रेसर, 1983 में गेडोर ,... हैदराबाद एस्बेसटोस में पुलिस फायरिंग और 60 वरकर डिसमिस... 1994 में सपना-सोभाग टैक्सटाइल्स ,1996 में लखानी शूज,... की घटनायें चन्द उदाहरण हैं। दो फैक्ट्रियों से हड़ताल के जरिये नौकरी से निकाले गये एक मजदूर को अब जहाँ वह काम कर रहे हैं वहाँ हड़ताल का माहौल रचा जाता देख कर अपनी नौकरी फिर खतरे में नजर आ रही है।

हमले के लिये माहौल बनाना

हमलों से पहले हमलों के लिये माहौल बनाये जाते हैं। मैनेजर लोग क्वालिटी, क्वान्टिटी, टाइम की पाबन्दी पर सख्ती के संग चार्जशीट-सस्पैन्शन के राग अलापने लगते हैं और लीडर लोग जुगलबन्दी में गरमागरम भाषण देने लगते हैं। इस या उस मामले को तूल देने के प्रयास किये जाते हैं। तिल का ताड़ बना कर भड़काने की कोशिशें होती हैं।

भड़कना खतरे ही खतरे लिये है

बड़े हमलों के लिये बोनस, एग्रीमेन्ट, गाली-गलौज अथवा मार-पीट को जरिया बना कर मजदूरों को भड़काने की कोशिशें लगातार की जाती हैं। भड़कने का मतलब है तालाबन्दी अथवा हड़ताल से मजदूरों का कचूमर निकालना सरल करना और-या पुलिस से मजदूरों के सिर फुड़वाना आसान बनाना।

काफी समय से **एस्कोर्ट्स ग्रुप** में मैनेजमेन्ट के लिए बड़े पैमाने पर मजदूरों की छँटनी करना एक आवश्यकता बनी हुई है। लेकिन एस्कोर्ट्स मजदूर कुछ इस कदर खुद कदम उठा रहे हैं कि मैनेजमेन्ट चाहते हुये भी अब तक उन पर बड़ा हमला नहीं कर पाई है। मिनी एग्रीमेन्टों की कड़वी खिचड़ी के बाद इधर दीर्घकालीन एग्रीमेन्ट की आड़ में एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट बड़े हमले के लिये कमर कस रही है। मैनेजमेन्ट की 17 या 37 डिमान्डें और मजदूरों को गरम करने, संघर्ष में उतारने के प्रयास बड़े हमले के लिये माहौल बनाने के हिस्से हैं।

मजदूरों के 21 महीनों के वेतन, सर्विस-ग्रेच्युटी और प्रोविडेन्ट फन्ड के करोड़ों पर कुन्डली मारे बैठी **झालानी टूल्स** मैनेजमेन्ट कम्पनी की सम्पत्ति बेच, कट-कमीशन खा कर रफुचक्कर होने की फिराक में है। मजदूरों पर इस बड़े हमले के लिये मैनेजमेन्ट ने भड़काने की अनेक कोशिशें की हैं लेकिन झालानी टूल्स में कार्यरत मजदूर अब तक भड़के नहीं हैं। इधर सड़कों पर गत्ते ले कर खड़े होते झालानी टूल्स के मजदूरों की बढती संख्या, खुद कदम उठाते मजदूरों की बढती तादाद ने मैनेजमेन्ट के लिये भड़काने वाले कदम उठाना अर्जेन्ट बना दिया है।

बचने से आगे

भड़कने से बचना पर्याप्त नहीं है। कुछ और भी करना जरूरी है क्योंकि आखिर कब तक और किस हद तक किसी की करतूतें बरदाश्त

(बाकी पेज तीन पर)

मजदूर समाचार की हम पाँच हजार प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं।
आप भी लिखिये। अपनी बातें खुल कर कहिये, फ्री में कहिये।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद—121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

पब्लिक स्कूल प्रवेश

दीनदयाल अध्यापक आज पचास वर्ष की आयु को पार कर चुके हैं परन्तु कोई स्थिर विचारधारा नहीं बना पाये हैं। प्रायः वे भावना में बह जाते हैं। मन ही मन वे अपनी तुलना – अपनी नहीं ,अपने स्वभाव की तुलना मोहम्मद तुगलक से करते हैं जो पल में पर्वत तो पल में मासा बन जाते थे।

चौथे महीने की चार तारीख को वे अपनी पत्नी के तानों से बाध्य हो कर चले घर से किसी अच्छे स्कूल की तलाश में। ऐसी बात नहीं कि उनको अच्छे स्कूलों का ज्ञान नहीं है। भारत ही नहीं विश्व स्तर के श्रेष्ठ स्कूलों का उनको ज्ञान है और यह भी ज्ञान है कि उनमें प्रवेश कब और कैसे होता है। उनको इस बात की बड़ी अच्छी तरह जानकारी है कि उन शिक्षा की ऊँची दुकानों में जो अध्यापक पढाते हैं वे न तो उनसे ज्यादा पढे- लिखे हैं और न ही उनको उनसे ज्यादा वेतन मिलता है।

फिर भी न जाने क्यों उनके बड़े तीन बालक गाँव के राजकीय उच्च विद्यालय में उन्हीं के द्वारा पढाये जाने पर भी सफल क्यों नहीं हुये। अब उनकी पत्नी नहीं चाहती कि उनका सबसे छोटा और अन्तिम बालक उन्हीं के स्तर का रहे।

उपरोक्त सभी बातों की जानकारी होते हुये भी वे मन की सांत्वना के लिये प्रातः नौ बजे अच्छे स्कूल को चल दिये। अच्छा स्कूल राजस्थान की सीमा के निकट उनके घर से लगभग बीस किलोमीटर ही पड़ता था। आने- जाने का किराया मात्र 24 रुपये। फिर भी मास्टर जी ने 210 रुपये जेब में डाल लिये। पाँच का एक सिक्का तथा पाँच का एक नोट भी ऊपर से डाल लिये तथा दो वाले दो सिक्के भी टटोल कर जेब में डाल लिये। अब श्रीमान जी के पास कुल मिला कर 224 रुपये हो गये। कहने का मतलब जो कुछ भी घर में नकदी थी वो सभी दीनदयाल की जेब में ।

बस ठीक नौ बजे मिल गई तथा दस बजे कस्बे बहल में पहुँच गई जहाँ BRCM पब्लिक स्कूल था। चार- पाँच वर्ष पहले जब यह स्कूल बना ही था तब भी वह एक बार यहाँ आये थे। तब कोई विशेष बात न थी। पर अब वो बात नहीं। पूरे पचास एकड़ के जंगल में मंगल था। विद्याग्राम क्या था, महामरूस्थल में विशाल मरूद्यान था। मुख्य द्वार पर दो गोरखे जवान पूरी फौजी वर्दी में तैनात थे। बड़ी कठिनाई से दरवाजा खोला तो एक लिपिक ने विवरण दर्ज किया। अन्त में गाड़ी नम्बर व फोन नम्बर पूछा तो दीनदयाल जी ने बताया " कोई चीज नहीं है।" " नहीं हैं तो फिर अन्दर जाने की जरूरत ही क्या है? आपके बच्चे को यहाँ प्रवेश नहीं मिल सकता।", द्वारपाल ने कहा।

" मिल क्यों नहीं सकता ? बच्चा प्रतिभाशाली है। सभी प्रवेश टैस्ट पास कर लेगा और मैरिट के आधार पर प्रवेश लेगा।", दीनदयाल ने गर्वित हो कर कहा।

" श्रीमान जी सभी पैसे का खेल है। यदि आपके पास पैसे की मैरिट है तो फिर पढाई में चाहे जीरो हो, आपका बच्चा हीरो है।"

उनसे ज्यादा मथ्था- पच्ची न करते हुये मास्टर दीनदयाल जी कार्यालय की तरफ बढे। मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित दीनदयाल को समझते देर न लगी जब उन्हें विवरण पत्रिका के 200 रुपये देने पड़े। जेब में दो- चार सफेद कागज और एक पेन के अतिरिक्त धेला भी शेष नहीं। प्रोसपैक्ट्स देने वाले महाशय ने अंग्रेजी में कहा कि 5000 रुपये अदा करके रजिस्ट्रेशन करवाते जाओ नहीं तो प्रवेश परीक्षा में बैठने का अवसर नहीं मिलेगा। दीनदयाल ने भी अंग्रेजी में ही उत्तर दिया, " धन्यवाद, यह कर्म मैं कल करवा दूँगा। आज तो केवल जानकारी हेतु ही आया था।"

यहीं से बेचारे चिन्ता में पड़ गये। "अच्छा फँसा। मैंने बस स्टैन्ड पर सिगरेट का पैकेट लिया ही क्यों ? फिर दो रुपये दो किलोमीटर के यहाँ तक भी दिये क्यों ? अब पैदल ही बस स्टैन्ड जाना पड़ेगा और फिर बारह रुपये का भी बन्दोबस्त करना पड़ेगा नहीं तो बीस किलोमीटर पैदल चलते- चलते सारा दिन बीत जायेगा। जल्दी में घर से खाना खा कर भी नहीं आया और चाय के पैसे भी जेब में नहीं हैं।"

वास्तविकता यह है कि दीनदयाल कभी कठिनाइयों से हार मानने वाले नहीं हैं। पैसे वाले कई जान- पहचान के इस गाँव में भी हैं और वह पैदल भी जा सकते थे। एक सिगरेट सुलगाई और खत्म होने तक पहुँच गये बस स्टैन्ड। पीया मुफ्त का ताजा जल और सार्वजनिक बैंच पर बैठ कर पढ़ने लगे प्रवेश सम्बन्धी जरूरी जानकारी। सभी विवरणों सहित कुल व्यय 68,000 रुपये और दर्जनों आवश्यक चीजों के 20,000 रुपये अतिरिक्त।

उसके बाद क्या पढना था ? श्रीमान मास्टर साहब ने फिर भी बेमन से बैठे- बैठे पूरी विवरणिका पढ डाली। पूरे 90 का स्टाफ था ; 24 एकड़ में भवन था ; चार होस्टल – 12 घोड़े – स्विमिंग पूल और पता नहीं क्या- क्या था। और यहाँ जेब में बारह बजे थे तो घड़ी में भी बारह का समय और पेट में कूद रहे थे भूखे चूहे।

पूरे मन से रघुवीर को याद किया और रघुवीर आन उपस्थित हुआ। उसने मोटरसाइकिल को पास में खड़ा किया तो हड़बड़ा कर दीनदयाल जी उठे। रघुवीर कह रहा था, "चलना है तो आओ बैठो घर चलते हैं। अपनी तो आज की ड्युटी पूरी हो गई ।" दीनदयाल अपने परम मित्र प्राध्यापक रघुवीर के पीछे बैठ गये।

बारह बज कर तीस मिनट पर दीनदयाल जी अपनी पत्नी की बगल में खाना खा रहे थे और उन्हें सारा हाल बता रहे थे। श्रीमती जी ने फैसला सुनाया, " तो फेर मन लगा कीं पढा आपणे सरकारी स्कूल मँ आर घर बी पढाया कर। इस छोरे न तूँ सही पढा दे। अखबार पढणे छोड़।"

8.4.98 **– एक अध्यापक**

लुधियाना

जनता नगर, लुधियाना में स्थित एक फैक्ट्री करनैल सिंह एण्ड सन्स, 16 आर एरिया बी, में कम से कम 150 मजदूर काम करते हैं। एक वरकर घर जाने के लिये एक महीना पहले से ही हिसाब देने को बोला हुआ था। इसके बावजूद ऐन मौके पर मालक ने साइन करा लिया और उसे भगा दिया। इस पर विरोध में उस फैक्ट्री में कार्यरत फोरजिंग डिपार्ट के 54 और बाकी मजदूरों ने मोल्डर एन्ड स्टील वरकर्ज यूनियन तथा पंजाब इन्डस्ट्रीयल वरकर्ज यूनियन को साथ में ले करके अपनी एक मीटिंग दाना मण्डी में रखी और विशाल प्रदर्शन फैक्ट्री के गेट पर किया। तीन दिन तक फैक्ट्री बन्द रही। फिर मालक मजदूरों को काम पर ले गया और मजदूर को 13 दिन की टूटी दिहाड़ी व पूरा हिसाब दिया और बाकी मजदूरों को तीन दिन की टूटी दिहाड़ी भी देनी पड़ी। ... 6.4.98

–मोल्डर तथा इन्डस्ट्रीयल यूनियनों से जुड़े कुछ मजदूर, लुधियाना

बीड़ी

बीड़ी – स्वर्ग की सीढी,
पियो बीड़ी – पीढी दर पीढी,
चाहे बुरी हो – बहुत बुरी,
न कर परवाह – सूटो बीड़ी।

टाइम कम हो या टाइम भारी,
रखो साथ में एक पिटारी,
लेकिन न भी पीते हो तो,
कहो कि हम पीते हैं बीड़ी।

क्योंकि मालिक का डण्डा जब
मजदूरों पर बरसता है,
यही बहाना बचता है –
हम तो जी, पीते हैं बीड़ी।

बल्कि ज्यादा अच्छा यही है
सेहत की कक्षा यही है,
हम पीते हैं बीड़ी कह कर –
काम से बच जाओ,
ले कर थोड़ी साँसें उम्दा,
जीवन मधुर बनाओ।

.....

– **बलविन्द्र सिंह,** दिल्ली

बचपना

आज मैं बहुत बोर हो रहा था। मैं कुछ सोच भी रहा था। परन्तु क्या सोच रहा था यह मुझे समझ नहीं आ रहा था।....

मैने आठवीं कक्षा की परीक्षायें दी हैं। परीक्षाओं के बाद मेरी बहुत लम्बी छुट्टियाँ पड़ गई। छुट्टियों से पहले परीक्षा का भार था, अब छुट्टियों के बाद घर के काम का भार। परीक्षा से पहले बहुत से अरमान थे जैसे खूब खेलना, घूमने जाना आदि परन्तु एक भी अरमान पूरा न हुआ। कहते हैं दिल के अरमान दिमाग की सोच से पूरे होते हैं, परन्तु अरमान पूरे करने की सोच से तो अरमान दिमाग से ही निकल गये!

छुट्टियाँ पड़ने के एक- दो दिन तक तो मैं बहुत खुश था परन्तु उसके बाद मैं बोर- सा होने लगा। माँ तथा बड़ी बहन नौकरी करती हैं और पिताजी अपने कामों में व्यस्त रहते हैं। एक छोटा भाई है जो स्कूल जाता है। उसे स्कूल ले जाना तथा स्कूल से ले कर आना तो मेरी दिनचर्या बन गई है। मैं घर में अकेला रहता हूँ। घर के आस- पास के सभी बच्चे मेरे से छोटी उम्र के हैं। मेरे सारे साथी घूमने अलग- अलग स्थानों पर गये हैं।

घर का सारा काम मुझे ही देखना पड़ता है। घर के कामों में बर्तन धोना, झाड़ू लगाना, खाना बनाना, पानी भरना, सफाई करना आदि काम हैं। अगर प्रात: के बर्तनों की सफाई कर दो तो बाद में दोपहर के खाने के बर्तन हो जाते हैं। अगर बर्तनों को न धोओ तो माँ डाँट लगाती है। कभी पिताजी मुझसे काम करने को कहते हैं। अगर घर के अन्दर थोड़ी- बहुत गन्दगी हो तो पिताजी कहते हैं अरे कुछ तो घर की सफाई का ध्यान रखा कर। पिताजी खाना खाने के बाद कुछ देर आराम करते हैं। आलस्य होने के कारण मैं भी कुछ देर के लिये सो जाता हूँ। अधिक काम करने के कारण मैं ज्यादा थक जाता हूँ इसलिये कुछ ही समय में मुझे गहरी नींद आ जाती है। पिताजी कब चले जाते हैं कभी- कभी तो पता भी नहीं चलता। नींद तब खुलती है जब माँ घर में पहुँच जाती है। कमरा गन्दा होता है। कपड़े- बिस्तर भी इधर- उधर पड़े होते हैं।

माँ बोलती है, " घर के काम का तो ध्यान ही नहीं रखता। घर की सफाई भी नहीं कर सकता। तुम्हें बैठे- बैठे कैसे आराम आता है? घर के काम की ओर ध्यान ही नहीं दोगे, यूँ ही खाली रहोगे। घर का काम तो किया करो।"

मैं बोलता हूँ, " माँ मैं घर का काम करता तो हूँ।"

माँ बोली, "वो तो मुझे नौकरी से आ कर ही दिखाई देता है। कहीं बर्तन पड़े रहते हैं, कहीं पर कपड़े पड़े रहते हैं। झाड़ू भी नहीं लगा होता। घर के पास पानी होते हुये भी पानी नहीं भर सकता। मजे से सो जायेगा लाट साहब कहींका। काम करने में तो जैसे इनकी जान निकलने लगती है।"

फिर उन सभी कामों को दोबारा करना पड़ता है। " बोल- बोल कर तो अब झाड़ू मारा है", माँ बोली, " अपने दिल से तो कोई काम ही नहीं करोगे। बोलने पर ही काम होता है।" माँ नौकरी से आ कर छोटे- छोटे काम निकालने लगती है। इतनी बार एक काम को करने पर सुस्ती आती ही है। माँ एक काम को करने को बार- बार कहती है। अगर वह काम न करो तो माँ फटकार लगाती है। माँ बोलती है, "बार- बार बोलने पर भी तुम पर कोई असर नहीं पड़ता। तुम इन्सान हो या हैवान। ऐसे में बड़े हो कर तुम आखिर करोगे क्या? मेरी तो समझ में ही नहीं आता!"

फिर रात को माँ बोलती है ये काम कर और दूसरी तरफ बड़ी बहन बोलती है ये काम कर। अगर माँ का काम करो तो बड़ी बहन डाँटती है। अगर बहन का काम करो और माँ का काम न करो तो माँ फटकार लगाती है। इसलिये बहुत जल्दी- जल्दी काम करना पड़ता है।

प्राय: रात को हम बहुत देर से सोते हैं। सुबह जल्दी उठना पड़ता है। माँ को प्रात: देर हो रही होती है। माँ चाय बनाने को बोलती है। उठते ही शरीर में सुस्ती तो रहती ही है और माँ एक ही बात को कई बार बोल देती है। अगर थोड़ी देर हो जाये तो माँ बोलती है, " यूँ ही मुँह उठा कर बैठ जाता है। दूसरों की तो प्रवाह ही नहीं करते। क्या करूँ इनके साथ?" अगर कोई भी काम माँ के दो या तीन बार बोलने पर करो तो माँ गुस्सा करती है और कहती है, " फटकारें मारे बगैर तो इनका भोजन ही नहीं पचता। थोड़ी तो शर्म किया कर। अगर किसी बात को दस बार बोलो तो ये करते हैं। शर्म तो जैसे इन्होंने बेच डाली हो।"

जिस दिन माँ को घर का सारा काम करा मिलेगा उस दिन ढूँढ- ढूँढ कर काम करवाने लगेगी। अगर किसी काम को करने से ना कर दो तो गंगाराम से धूम- धड़ाक शुरू हो जाती है। धूम- धड़ाक करने के बाद माँ बोलती रहती है।

आखिर छुट्टियों में सुबह से शाम तक सारा काम करने के बाद खेलने का मन करता है। दरवाजा बन्द करके कुछ देर बाहर खेलने के लिये जाऊँ तो माँ रास्ते में मिलती है और घर आने को कहती है। घर में आने के बाद माँ बहुत- कुछ बोलती है। परीक्षा से पहले बोलती थी, " परीक्षायें नहीं देनी क्या? " अब छुट्टियों में बोलती है, " घर के अन्दर नहीं रह सकता?" मैं कई दिनों तक ऐसे ही खेलता रहा तो माँ बोली, " समझाने का असर होता भी है या नहीं? बेशर्म कहींका! इसने तो मेरा दिमाग खराब करके ही रख दिया।"

एक दिन माँ नौकरी करने जाने से पहले बोली कि आज सारा काम कर दियो। माँ के नौकरी पर जाने के बाद मैं नहा- धो कर खेलने चला गया। घर का एक भी काम नहीं किया। साँय माँ नौकरी करके आई तो घर पूरा गन्दा पड़ा था, बिलकुल सफाई नहीं हुई थी और मैं भी घर से लापता था। मैं खेल कर आया तो माँ ने कहा घर के अन्दर आ। माँ ने पहले पानी पिलाने को कहा। उसके बाद चाय बनाने को कहा। उसके बाद चाय के बर्तनों की सफाई करने को कहा। फिर सब्जी काटने को कहा..... मैंने कहा कि सारा काम मुझसे करवा लोगी तो दीदी कुछ भी नहीं करेगी। मुझे क्या पता था मेरे एक काम के ना करने से क्या होगा। माँ के हाथ में गंगाराम आया और मरम्मत शुरू हो गई...

20.4.98 — **आशीष आसू**

उनके माहौल और हमारी मर्जी

(पेज एक का बाकी)

की जा सकती हैं। केवल बचने के चक्कर में रह कर हम देर- सबेर अक्सर भड़कावे में आ ही जाते हैं।

जरूरत है मैनेजमेन्टों के तन्त्र और जाल को फेल करने की। रुटीन में मजदूरों द्वारा खुद उठाये जाते अनगिनत सतरंगी कदम यह कार्य करते हैं। बड़े हमलों के दौरान भी मजदूरों द्वारा खुद कदम उठाना यह कर सकता है। फर्क यह नजर आता है कि बड़े हमलों के लिये माहौल के वक्त मजदूरों द्वारा आपसी चर्चायें बढाना और मजदूरों की टोलियों के बीच तालमेल आवश्यक बन जाते हैं। हमारे बीच बातचीत और तालमेल हमें भीड़ नहीं बनने देते और हमें बिचौलियों की जकड़ से मुक्त करते हैं। इस प्रकार खुद सोचने- समझने- फैसले लेने- कदम उठाने का बढता सिलसिला भड़कने- भड़काने के आधार को सिकोड़ता है।

उनके माहौल के रंग- रूप को हमारी मर्जी उलट- पुलट सकती है।

"विशेष परिस्थितियाँ" . यह भाषा सरकारों, मैनेजमेन्टों, लीडरों की है। खास परिस्थितियाँ कुछ नहीं होती। बद से बदतर होती हालात मजदूरों के लिये आम बात है।

सीरॉक क्रेडिट

सीरॉक क्रेडिट प्लाट न. 267–268, सैक्टर 24 में हिन्दुस्तान वायर्स लिमिटेड के अन्दर ही स्थित है। इस कम्पनी में बाल पाइन्ट पेन के नोजल बनते हैं। कम्पनी के अन्दर 30 स्टाफ कर्मचारी, 25 मशीन आपरेटर एवं 30 हैल्परों के अलावा अन्य मैनेजर स्टाफ है। यूनियन बनाने की वजह से सभी हैल्परों को निकाल दिया तथा मशीन आपरेटरों को माल स्टॉक होने का बहाना ले कर ले ऑफ कर दिया जबकि सारी मशीनें स्टाफ कर्मचारी एवं अन्य नये कर्मचारियों से चलवा रहे हैं। इस बारे में श्रम विभाग को अनेकों बार शिकायतें की किन्तु श्रम विभाग ने कोई भी एक्शन नहीं लिया। पहले कम्पनी में एक शिफ्ट मशीनें चलती थी परन्तु अब प्रबन्धक तीनों शिफ्ट चलाते हैं। मशीन आपरेटर कर्मचारियों को ले ऑफ के बाद छँटनी करने का नोटिस लगाये हैं।

हम सिरॉक क्रेडिट के 25 मशीन आपरेटर हैं। हम स्थाई कर्मचारी हैं और 5 साल से काम करते आ रहे हैं। हमें बहुत छोटी- छोटी चीजें जैसे हाथ धोने का साबुन, परमानेन्ट का लैटर, नाइट लन्च, वर्दी भी मैनेजमेन्ट ने नहीं दी। चाय के समय में हमें एक हाथ में चाय का कप ले कर दूसरा हाथ मशीन के बटन पर रखना पड़ता। ऐसी परिस्थितियों में हम तंग हो गये।

हम हिन्दुस्तान वायर्स के लीडरों से मिले तथा अपनी समस्याओं के बारे में उन्हें बताया। उन्होंने हमें अपनी यूनियन में मिलने की सलाह दी। तब हमने चन्दा दे कर एटक यूनियन के फार्म भरे और कार्यवाही करने के लिये प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि एटक यूनियन के प्रेसीडेन्ट दर्शन सिंह के पास चन्दा जमा करके आगे कार्यवाही होगी। उन्होंने हमें दर्शन सिंह से मिलने के लिये तारीख दी पर वे हमारे साथ साथ दर्शन सिंह के पास नहीं गये। हम पाँच - सात आदमी दर्शन सिंह के आफिस का पता लेकर गये। दर्शन सिंह ने हमें कहा कि तुम हिन्दुस्तान वायर्स यूनियन के साथ किसी भी कानून के हिसाब से नहीं मिल सकते क्योंकि तुम्हारी कम्पनी तथा मैनेजमेन्ट अलग है। इसलिये उन्होंने हमें अलग से यूनियन बनाने की सलाह दी तथा यूनियन बना कर, चन्दा ले कर फार्मो की कार्यवाही की। एक डिमाण्ड नोटिस कम्पनी के नाम रजिस्ट्री करवाया और कहा कि अगर कम्पनी तुम्हें डिमाण्ड नोटिस पर बात करने के लिये बुलाये तो मेरे बगैर तुम कम्पनी से बात मत करना – कह देना कि हमारे कामरेड दर्शन सिंह जी से बात करो।

डिमाण्ड नोटिस मिलने के बाद कम्पनी ने 25–30 हैल्परों को निकाल दिया और हमें उनकी जगह जबरदस्ती काम करने को कहा। हम आपरेटर हैं। हम हैल्पर तथा आपरेटर, दोनों का काम कैसे कर पायेंगे? हमने कहा कि ऐसा करने से क्वालिटी और मशीन खराब होगी तो उन्होंने नौकरी से निकालने की धमकी दी। हमने दर्शन सिंह को बताया तो उन्होंने कहा कि कम्पनी की स्थिति खराब है और आजकल बेरोजगारी ज्यादा है इसलिये कम्पनी जैसा कहती है वैसा करो। फिर कम्पनी ने ले ऑफ करके हमें बाहर निकालने की धमकी दी। हमने दर्शन सिंह जी को फोन करके बुलाया तो उन्होंने फोन पर कहा कि हमारे पास गाड़ी नहीं है। मेरा भाई मेडिकल में है। मैं नहीं आ सकता। तुम शाम को मेरे आफिस में आके मिलो। हमने करीब 11 बजे फोन किया था। इसके बाद कम्पनी ने 11.30 बजे दर्शन सिंह को फोन किया और वे तुरन्त आ गये।

फिर हमें ये अहसास हुआ कि दर्शन सिंह हमारे लीडर हैं पर हमारे लिये वो कुछ नहीं कर सकते। इसके बावजूद उनके कहने पर ले ऑफ में हम गेट के बाहर बैठ गये। हमारे सभी श्रमिक हमें मारने के लिये तैयार होने लगे कि तुमने कैसा लीडर पकड़ा है जो बुलाने पर आता नहीं और बार- बार हमें अपने आफिस में बुलाते हैं जबकि 27.2.98 से कम्पनी ने ले ऑफ दे कर नौकरी से हटा दिया है। ऐसी कठिन परिस्थितियों में हम कामरेड जवाहर लाल जी से मिले तथा कई बार, कई- कई पत्र समझौता अधिकारी, लेबर इन्सपैक्टर, सिरॉक के मैनेजिंग डायरेक्टर, हिन्दुस्तान वायर के डायरेक्टर आदि को लिखे। लेकिन आज 50 दिन से भी ज्यादा हो गये हैं और कुछ नहीं हुआ।....

कम्पनी प्रबन्धक कहते हैं कि लेबर डिपार्टमेन्ट में जाओ, वह मेरी जेब में है।. ... हम मजदूरों को कोई भी आगे रास्ता नहीं दिखाई देता।

18 और 20 अप्रैल 98 — **सीरॉक क्रेडिट के मजदूर**

त्रिकुटा मैटल

मैं त्रिकुटा मैटल प्रा.लि. में काम करता हूँ। हमारे यहाँ पर हैल्पर की कोई कीमत नहीं है। हैल्पर को केवल 900 रुपये देना शुरू करते हैं और साल- भर जब वह काम कर लेता है तब कहीं जा कर 100 या 150 रुपये बढा देते हैं। ज्यादातर नाबालिग को नौकरी पर रखते हैं।

ये कम्पनी जब पहले चल रही थी तब इसका नाम त्रिकुटा मैटल था और इस कम्पनी के दो मालिक थे। वो अलग- अलग हुये तो इसने वरकरों को लोभ दिखा कर और बहका कर उस मालिक से अपनी तरफ कर लिया। कह रहे थे कि मैं अपनी कम्पनी को लिमिटेड कर रहा हूँ इसलिये तुम मेरी कम्पनी में काम करना। तुम्हें पहले से अच्छा वेतन मिलेगा तथा तीन साल बाद फन्ड भी मिलेगा। फन्ड के अलावा जो सुविधायें होती हैं वो भी लागू कर दी जायेंगी। लेकिन नये वरकर को ये सुविधायें अभी भी नहीं दी जा रही। सबसे मेन जो चीज है वो ये है कि हमारे यहाँ पर हरियाणे का जो न्यूनतम वेतन है वो भी नहीं दिया जा रहा। जो नये भरती करते हैं उन आपरेटरों को 1200, 1350 तक ही देते हैं।

हमें ये पता नहीं था कि नई फैक्ट्री में अब शुरू से ही सारी सुविधायें उपलब्ध होती हैं। हमसे तनखा वाले रजिस्टर पर दस्तखत जरूर करवाते हैं पर उस पर सिवाय नाम और ई.एस. आई. कार्ड नम्बर के, बाकी कुछ भी नहीं लिखा होता। ना ही हमें पे- स्लिप देते हैं और ना ही उस पर दस्तखत करवाते हैं।

10.4.98 —**त्रिकुट मैटल का एक मजदूर**

थाम लेंगे हाथ जब जलती मशालों को
देख लेना तब लगेगी आग पानी में
नर्म सपनों की त्वचा जो नोचते पंजे
भोंथरे होंगे वही चट्टान से घिसकर
बहुत मुमकिन थरथराये यह गगन सारा
हड्डियाँ बारूद हो जायें सभी पिसकर
रोशनी की सुरंगें हमको बिछानी हैं
अँधेरा घुसपैठ करता राजधानी में
बंध सका दरिया कहाँ है आज तक उसमें
बर्फ की जो एक ठंडी कैद होती है
लाजिमी है पत्थरों का राह से हटना
सफर में जब चाह खुद मुस्तैद होती है
साहिलों तक कश्तियाँ खुद ही चली आतीं
जोर होता है इरादों की रवानी में
सदा ही बनते रहे हैं लाख के घर तो
कब नहीं चौपड़ बिछी इतिहास को छलने
प्राप्य लेकिन पार्थ को तब ही यहाँ मिलता
जब धधक गांडीव से ज्वाला लगे जलने
जब मुखौटे नायकों के उतर जायेंगे
रंग आयेगा तभी तो इस कहानी में।

— **राजेन्द्र गौतम**, दिल्ली

गत्तों पर होती बातें

झालानी टूल्स फरीदाबाद के मजदूर भाइयो आप अपनी हालात तथा प्रशासन द्वारा अनसुनी का आजकल गत्तों पर लिख कर जनता को अपने पर हो रहे अत्याचार दिखला रहे हो। मजदूर वर्ग तो इस दर्द को खूब अच्छी तरह समझता है लेकिन इस देश का प्रशासन तथा जनता द्वारा चुन कर भेजे गये मन्त्री या जनप्रतिनिधी इस दर्द को समझने में असमर्थ हैं।.... आपके सामने इतिहास गवाह है कि इस प्रशासन ने किसी फैक्ट्री के मजदूरों को न्याय नहीं दिलाया है। ..... (बाकी अगले अंक में)

3 मई 98 — **एक बैंक वरकर**, फरीदाबाद

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**

सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।